छाया त्रिपाठी ओझा

जन्म स्थान- भुईंधरा, जौनपुर (उ.प्र.)
शिक्षा- एम.ए, बी एड
प्रकाशन- अक्षर -अक्षर गीत (गीत संग्रह)
सम्मान- अनेक सम्मान एवं पुरस्कार
संप्रति- अध्यापन कार्य

महक रहा हो मौसम जैसे

प्रीति हृदय पर कुछ यूँ छाई
महक रहा हो मौसम जैसे।

शब्द ठहर जाते अधरों पर
बैठ हृदय में भाव चहकते
खुलतीं बंद सहमती पलकें
देख रहीं बस कदम बहकते
ठहरी-ठहरी मधुर चाँदनी
देख मगर कुछ यूँ मुस्काई
बहक रहा हो मौसम जैसे!

आँख मिचौली सँग तारों के
खेल रहे हैं जुगनू सारे
पीकर मदिरा मगन हुए हैं
जैसे ये मदहोश नजारे
इधर उधर कुछ भटके बादल
हँसकर बदन छुए पुरवाई
चहक रहा हो मौसम जैसे!

खुशियाँ बैठी हैं सिरहाने
लहराती भावों की सरिता
छिपकर बैठी बना रही है
लाज निगोड़ी अनुपम कविता
करवट-करवट ढीठ कामना
मचल रही है बस हरजाई
दहक रहा हो मौसम जैसे!

मुरझाये सपने

जीवन की इस तेज धूप में
झुलस झुलस मुरझाये सपने।

घर पावन सा वो मिट्टी का
नेह मिले जो अपने हिस्से!
छूट गया अम्मा का आँचल
नहीं रहे नानी के किस्से!
गुड्डे गुड़ियों के सँग कितने
हमने खूब सजाये सपने।
जीवन की ----------

पीहर गयी खुशी ज्यों अपने
धड़कन धड़कन भटकें यादें!
अधरों पर है मौन सुशोभित
अंतस में चिहुँकें फरियादें!
देख देख ऋतुओं के मन को
नयनों ने छलकाये सपने।
जीवन की ----------

विस्मृत हो जाते दुख सारे
और न आकर छलतीं रातें!
अपने पाँव धरे फूलों पर
साथ हमारे चलती रातें!
निष्ठुर जग के ही द्वारे पर
जा जाकर मुस्काये सपने।
जीवन की--------

ISSN:2583-8849